शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

# 'चाँद' का फाँसी अंक और राष्ट्रीय आन्दोलन

दीप कुमार मित्तल (शोधार्थी)
भारतीय भाषा केंद्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली, भारत

## शोध संक्षेप

*'चाँद' भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के दौर की चर्चित हिन्दी पत्रिका है। इसका प्रकाशन रामरख सिंह सहगल और राम मुकुंद लघाटे के सम्पादन में नवम्बर, 1922 में इलाहाबाद से मासिक पत्रिका के रूप में शुरू हुआ। श्री सहगल ने तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य से प्रभावित होकर उस समय चल रहे समाज-जागरण और राष्ट्रीय मुक्ति के अभियान का विस्तार करने के उद्देश्य से इसका प्रकाशन शुरू किया था। वस्तुतः उस समय अधिकांश पत्रिकाओं का प्रकाशन किसी व्यावसायिक लाभ की अपेक्षा समाज को बदलने की भावना से प्रेरित होकर किया जाता था। 'चाँद' अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में पूर्णतः सफल हुई, जिसका एक प्रमाण 'फाँसी अंक' है। यह अंक नवंबर,1928 में प्रकाशित हुआ था, जिसका सम्पादन आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने किया था। अंक के प्रकाशित होने के कुछ समय पश्चात् ही इसे अंग्रेजी सरकार ने जब्त कर लिया। ब्रिटिश सरकार ने यह कार्यवाही 'फाँसी अंक' को अपना विरोधी मानकर की थी। 'चाँद' को भी इसका पूर्वानुमान था, फिर भी उसने यह मार्ग क्यों चुना ? इस प्रश्न का समाधान फाँसी अंक पर समग्रता से विचार कर हो सकता है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी पर विचार किया गया है।*

## प्रस्तावना

'चाँद' ने सातवें वर्ष के प्रवेशांक के रूप में नवंबर,1928 में 'फाँसी अंक' का प्रकाशन किया। यह अंक इस बात का प्रमाण है कि चाँद ने अंग्रेजी हकूमत के साथ समझौता नहीं किया, बल्कि मुखरता के साथ अपना विरोध दर्ज करवाया। इतना ही नहीं ब्रिटिश काल में राष्ट्रीय आन्दोलन के समर्थन में ऐसा अंक फिर किसी अन्य पत्रिका का नहीं निकल सका। डॉ. रामविलास शर्मा ने बनारसीदास चतुर्वेदी के द्वारा सम्पादित किए गए 'शहीद अंक' की चर्चा के क्रम में 'फाँसी अंक' की अद्वितीयता को रेखांकित करते हुए लिखा है "विशाल भारत का 'शहीद अंक' अपेक्षाकृत कमजोर है। सामग्री बिखरी हुई है; उसमें वह आंतरिक एकता नहीं थी जो चाँद के फाँसी अंक में थी। इसका एक कारण भी है। शहीदों के सजीव संस्मरण तभी लिखे जा सकते हैं जब लेखक के सामने उनकी शहादत का ऐतिहासिक महत्त्व साफ हो और भविष्य का रास्ता भी साफ-साफ दिखाई देता हो। इसके अभाव में जीवनी-लेखन या संस्मरण श्रद्धांजलि अधिक बन जाते हैं, सजीव इतिहास कम रहते हैं।"1 अंक के प्रकाशित होते ही सरकार ने इसे जब्त कर लिया।

## ब्रिटिश शासन और 'चाँद'

अंग्रेजी सरकार 'चाँद' के फाँसी अंक पर बेहद कुपित थी। लेकिन यह सरकारी कार्यवाही ही इसकी अपार लोकप्रियता का कारण है। इससे पूर्व 'चाँद' पर कभी भी सरकारी कार्यवाही नहीं हुई, बल्कि शासकीय दृष्टि में यह एक उच्च-स्तरीय

पत्रिका समझी जाती थी और इसका नाम राजकीय विद्यालयों और पुस्तकालयों में खरीदी जाने वाली पत्रिकाओं की सूची में शामिल था। इसकी पुष्टि अग्रिम पंक्तियाँ करती हैं, "Highly appreciated and recommended for use in Schools and libraries by Directors of Public Instruction, Punjab, Central Provinces and Berar, United, Provinces and Kashmir State etc.,etc.".2 ये पंक्तियाँ पत्रिका के मुख-पृष्ठ पर छपती थीं और 'फाँसी अंक' के मुख पृष्ठ पर भी मुद्रित हैं। फिर, 'फाँसी-अंक' में आखिर ऐसा क्या प्रकाशित हुआ था, जिसे सरकार ने आपत्तिजनक माना ?

## विशेषांक की सामग्री

वस्तुतः 'फाँसी-अंक' में फाँसी देने की अमानवीय शासकीय प्रवृत्ति का विरोध किया गया था। यह कार्य योजनाबद्ध ढंग से सम्पन्न किया गया था। अंक के सम्पादन का भार हिन्दी के चर्चित साहित्यकार आचार्य चतुरसेन शास्त्री को सौंपा गया और उन्होंने इसे बखूबी निभाया भी। अंक में संयोजित सभी रचनाओं में देश-विदेश की विभिन्न घटनाओं, निर्णयों की चर्चा करते हुए एक स्वर से प्राण-दण्ड को तर्क विहीन और न्याय-विरोधी सिद्ध किया गया था। पहले यह "विशेषांक 200 पृष्ठों का प्रकाशित करने का निश्चय किया गया था, किन्तु हम देख रहे हैं, 325 पृष्ठ छापकर भी आधे से अधिक लेख तथा कविताएँ प्रकाशित नहीं हो सकीं।"3 शेष सामग्री को भी आगामी दिनों में प्रकाशित करने की योजना थी। "यदि इस विशेषांक का हिन्दी-संसार ने उचित सत्कार किया तो आगामी मई का 'चाँद' भी 'फांसी-अंक' के नाम से ही एक दूसरा विशेषांक किया जाए, पर यह बात सर्वथा पाठकों के सहयोग और सहानुभूति पर अवलम्बित है।"4 इस अंक की 10,000 प्रतियाँ मुद्रित की गई थीं और इन्हें छापने का व्यय 12,500 रूपए था। इसकी सम्पूर्ण चर्चा अंक के सम्पादकीय में की गई है। लेकिन इसके प्रकाशित होते ही सरकार ने इसे जब्त कर लिया। इसका अंदेशा 'चाँद' के सम्पादकों को पहले से ही था। जुलाई, 1928 के अंक में छपे फाँसी-अंक के विज्ञापन से इसे सरलता से समझा जा सकता है। इसमें लिखा था "इस अंक का सम्पादन हिन्दी-जगत के परिचित विद्वान आचार्य श्री चतुरसेन जी शास्त्री अपनी लोहे की लेखनी से करेंगे, इसलिए इस अंक का प्रत्येक अक्षर आग का अक्षर होगा।"5

'चाँद' अपनी पाठक संख्या बढाने के लिए अपने विशेषांकों और अपने कार्यालय से प्रकाशित होने वाली पुस्तकों के लिए भी ऐसे विज्ञापन दिया करता था। लेकिन फाँसी-अंक का विज्ञापन परम्परा से हटकर था। यह सिर्फ लोकप्रियता बढ़ाने के लिए नहीं था, क्योंकि "यह अंक सारी पृथ्वी में घोषणा करेगा कि - मनुष्य के द्वारा मनुष्य की हत्या करना जघन्य काम है, पर यह जघन्य काम यदि न्याय और शान्ति के नाम पर किया जाए तो मनुष्य-जाति को कदापि न सजाने वाला....काम और भीषण पाप है।"6 यह बात 'चाँद' उस समय कह रहा था जब अंग्रेज भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम को कुचलने की हरसंभव कोशिश कर रहे थे।

'चाँद' का फाँसी-अंक दो भागों में विभक्त था। पहले भाग का सम्बन्ध उन रचनाओं और लेखों से था, जिनमें फाँसी अथवा मृत्युदंड की मुखालफत करते हुए बतलाया गया कि दंड का यह विधान किस प्रकार न्याय का गला घोंट देता है। अपनी बात को पुष्ट करने के लिए फाँसी से जुड़ी विश्व की चर्चित घटनाओं का भी विवरण दिया गया था। साथ ही भारत में अंग्रेजों द्बारा

किए गए फांसी के नाम पर की गईं स्वतन्त्रता सेनानियों की हत्याओं से जुड़ी हुई रचनाएं भी थीं। इसके साथ ही 'कूका-विद्रोह के बलिदान', 'चापेकर बन्धु', 'कन्हाईलाल दत्त', 'सत्येन्द्रकुमार बसु', 'मदनलाल धींगरा', 'करतार सिंह साराभा', 'यतीन्द्रनाथ मुकर्जी', 'वोमेली युद्ध के चार शहीद', 'रामप्रसाद बिस्मिल', 'अश्फाकुल्ला खां' जैसे 47 शीर्षकों के अंतर्गत भारत की स्वतन्त्रता के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करने वाले शहीदों के विषय में भी प्रकाश डाला गया है। ये लेख अंक के 'विप्लव यज्ञ की आहूतियां' शीर्षक स्तम्भ के अंर्तगत प्रकाशित हैं। यह स्तम्भ ही फाँसी अंक का दूसरा खंड है।

'फाँसी' अंक के दूसरे खंड 'विप्लव यज्ञ की आहूतियां' में जिन शहीदों के विषय में लेख प्रकाशित हैं उनका सम्बन्ध स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेनेवाली ग़दर पार्टी से था। इन वीरों को अंग्रेजी हुकूमत ने फांसी पर चढ़ा दिया था। नवजागरण विशेषज्ञ प्रदीप कुमार सक्सेना के अनुसार यह ग़दर पार्टी के बलिदानियों के विषय में पहला लिखित दस्तावेज भी है। वे लिखते हैं "स्वाधीनता प्राप्ति तक, राष्ट्रीय इतिहास-लेखन में भी ग़दर-पार्टी के इतिहास का कोई प्रश्न नहीं था।... ग़दर-पार्टी मिट चुकी थी - वह एक आन्दोलन थी इस पर इतिहासकारों ने आज भी मुहर नहीं लगाई है। यूँ भी उपनिवेशवाद विरोधी चीजों पर हमारे इतिहासकार काफी सोचते हैं। सशस्त्र विद्रोह हो तो कलम और भी थर्राती है लेकिन हिन्दी की कितनी भी लानत-मलामत की जाए अंग्रेजी के विपरीत यह काम हिन्दी की ओर से ही हुआ। सर्वप्रथम हुआ और जोरदार ढंग से हुआ।... कहना न होगा, अभी तक चाँद का 'फाँसी अंक' ही वह पुरोहित है जिसने 'विप्लव-यज्ञ में डाली गई आहुतियों से' गड़रियों को, उनके लक्ष्य और पार्टी को भरपूर सम्मान दिया। यानी उनके बलिदानों पर रोशनी डाली और फांसी के फंदों तक पहुंचाने की उनकी यात्रा का खुला विवेचन किया। आज उसका ऐतिहासिक महत्त्व स्थापित हो चुका है।... जब तक कोई समाज विज्ञानी, शोधार्थी या इतिहासकार इससे पूर्व की सामग्री पेश नहीं करता तब तक 'फांसी अंक' ही ग़दर की प्रथम प्रतिश्रुति है, ऐसा मानना होगा।"7

विशेषांक के लेखक

'विप्लव यज्ञ की आहुतियाँ' स्तम्भ के अंतर्गत जो लेख हैं उनके विषय में एक महत्वपूर्ण बात यह है कि इस भाग का सम्पादन स्वयं क्रांतिवीर भगतसिंह ने किया था। इन 47 रेखाचित्रों में अधिकांश के नीचे उनके लेखकों का नाम भले ही दिया गया है, लेकिन इनमें से अधिकांश के वास्तविक लेखक भगतसिंह और शिववर्मा हैं। इसकी चर्चा करते हुए 'शहीद भगतसिंह : दस्तावेजों के आईने में' पुस्तक के सम्पादक चमनलाल ने लिखा है "चाँद के फांसी अंक (नवम्बर, 1928) में 'विप्लव यज्ञ की आहुतियाँ' शीर्षक से क्रांतिकारी देशभक्तों के 47 रेखाचित्र छपे थे। भगतसिंह की भतीजी वीरेंद्र सिन्धु ने 1977 में इन्हें 'मेरे क्रांतिकारी साथी- लेखक: भगत सिंह' शीर्षक से छपवाते हुए उल्लेख किया था कि इनमें से अधिकांश लेख भगत सिंह ने पहले 'किश्ती' (पंजाबी) में लिखे थे, विशेषतः पंजाब के क्रांतिकारियों से सम्बन्धित लेख। फांसी अंक के सम्पादक और प्रसिद्ध लेखक चतुरसेन शास्त्री ने भी इस बात की पुष्टि की थी कि इन लेखों में अधिकांश भगतसिंह ने लिखे थे। इन 47 रेखाचित्रों में से 37 तो निश्चय ही भगतसिंह द्वारा रचित थे, शेष शिव वर्मा द्वारा भी छद्म नामों से लिखे गए थे।"8

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

चाँद ने फाँसी अंक के 'विप्लव यज्ञ की आहुतियाँ' शीर्षक स्तम्भ के माध्यम से यह बात स्पष्ट रूप से कही थी कि ब्रिटिश सरकार अपने खिलाफ चल रहे आन्दोलनों का दमन करने के लिए न जाने कितने निरपराध लोगों को बेवजह मौत के घाट उतार दिया है, बल्कि अंक के पहले भाग में भी यही दर्शाने का प्रयास किया था कि फाँसी की सजा को नैतिक और मानवीय मापदण्ड पर सही नहीं ठहराया जा सकता है। अंक के एकदम आरम्भ में छपे अतिथि सम्पादक के 'विनयांजलि' शीर्षक से एक लेख से ही इस बात का परिचय मिला जाता है। इसमें अंग्रेजी हुकूमत के दमन-नीति का विस्तार से वर्णन करते हुए अंत में आमजन से ऐसी दमनकारी सत्ता को उखाड़ने का आह्वान इस प्रकार किया गया है "चाँद की बहिनों, भाईयों और बुजुर्गों के हाथ में - दीपावली के शुभ अवसर पर - 'फाँसी अंक' जैसा ह्रदय को दहलाने वाला साहित्य सौंपते हमारा हाथ काँपता है।... निकट ही वह दिन है। कुछ मास व कुछ वर्ष व्यतीत होने दो एक-महान विप्लव की आंधी सायं-सायं करती चली आ रही है, जो पचास वर्ष तक भारत को दिवाली के दिए न जलाने देगी, परन्तु उसके बाद जो दिए जलेंगे वे क्षुद्र मिट्टी के टिमटिमाते दिए न होंगे - वे होंगे रत्नदीप, और उन्हें साक्षात लक्ष्मी अपने हाथों से जलावेगी!।"9

उपर्युक्त पंक्तियों को पढ़कर समझा जा सकता है कि फाँसी अंक के माध्यम से 'फाँसी' दंड की पशुता और अनुपयुक्तता को समझाते हुए अंग्रेजों के द्वारा निर्दोष भारतीय नागरिकों को दिए जा रहे प्राणदण्ड का विरोध करना चाहता था। साथ ही भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में शहीद हुए चर्चित और प्रेरणास्रोत व्यक्तियों के रेखाचित्र प्रस्तुत करके आम जनता के सामने यह प्रश्न उपस्थित करना चाहता था कि कब तक भारतीय फाँसी के फंदे झूलते रहेंगे? यह स्मरणीय है कि जब इस अंक का प्रकाशन हुआ, तब तक प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त हो चुका था। भारतीय जन-मानस में अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष की भावना भर रही थी। 'साइमन गो बैक' के नारे लग रहे थे। जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड विश्व देख चुका था। अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक धरातल पर भी द्रुत गति से बदल रहा था। बुल्गारिया मित्र देशों के सैनिक कब्जों से मुक्त हो रहा था, मंचूरिया जापान के कब्जे से स्वतंत्र हो चुका था। चीन स्वतंत्र सरकार के गठन की दिशा में अग्रसित हो चुका था। ऐसे बदलते हुए समय में फाँसी अंक आम भारतीय के ह्रदय में उदीप्त हो रही स्वतंत्रता की भावना का ही प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करके अपने युगीन यथार्थ सम्पूर्णता में जुड़ रहा था।

### अंक की जब्ती

अपने देश की स्वतंत्रता, उन्नति और विकास की इच्छा रखना और उस दिशा में कार्य करना किसी नागरिक का पहला कर्तव्य है। अतः चाँद के प्रकाशक व सम्पादक इस भावना को फैलाने और उसे कार्यरूप में परिणत करने के लिए 'फाँसी अंक' का प्रकाशन कर रहे थे, तो यह किसी भी तरह से गलत नहीं था। लेकिन यह प्रयास परतंत्र भारत में किया जा रहा था। अंक में जिस प्रकार का सम्पादकीय था, जिस प्रकार की अन्य रचनाएं शामिल थीं, जिस प्रकार वह ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष करने वाले भारतीय वीरों के प्रति सम्मान प्रदर्शित कर रहा था, इन सभी वजहों से अंग्रेजों द्वारा उस पर प्रतिबन्ध लगाया जाना अति आवश्यक था। अंक को प्रकाशित होते ही जब्त कर लिया गया, उसकी सरकारी खरीद पर रोक लगा दी गई तथा अन्य रियायतें भी समाप्त कर दी गईं। उसकी एक-एक

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्रति जब्त कर ली गई। दुर्भाग्यवश, हिन्दी आलोचना इसके महत्त्व का आकलन करने में असमर्थ रही। प्रदीप सक्सेना के शब्दों में "सवाल यह भी है कि क्या प्रगतिशील, कम्युनिस्ट और साम्राज्यवाद-विरोधी साहित्य में इस अंक को वह जगह मिली, जिसका वह हकदार था ? स्वयं रामविलास शर्मा के साम्राज्यवाद-विरोधी पचास वर्षीय अभियान में यह मील का पत्थर कहाँ दिखाई दिया ? सशस्त्र संग्राम प्रेमी चिंतक भी गोबर पट्टीकी इस भेंट को मान नहीं दे पाए। नामवर सिंह से तो चलो यह आशा नहीं थी।"10

इस अंक के बाद चाँद ने खुलकर राष्ट्रीय आन्दोलन के समर्थन में लिखना शुरू कर दिया। उसके द्वारा छेड़ी गई मुहीम को अन्य पत्रों ने आगे बढ़ाया।

## निष्कर्ष

अंग्रेजों की दमनात्मक कार्यवाहियों में शहीद हुए ग़दर के क्रांतिकारियों के बारे में 'हिन्दू पंच' का 'बलिदान' अंक जनवरी, 1930 में प्रकाशित हुआ। इसमें भी फाँसी अंक के ही समान भारत और विश्व की फाँसी से जुड़ी विभिन्न घटनाओं और चर्चित बलिदानों की चर्चा की गई है। अंक की पूरी रूपरेखा 'फाँसी अंक' के सदृश है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि 'फाँसी अंक' ने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में पूर्ण सफलता अर्जित की। यह चाँद के राष्ट्रीय विचारों की उत्कृष्टतम अभिव्यक्ति तो था ही, पूरे हिन्दी प्रदेश में अंग्रेजी शासन विरोधी अपने ढंग का पहला अंक भी था।

## सन्दर्भ ग्रन्थ

*1 रामविलास शर्मा, आस्था और सौन्दर्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ 186*

*2 चाँद : फाँसी अंक, (सं.) चतुरसेन शास्त्री, स्वर्ण जयंती, शहादरा, नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ 1.*

*3 चाँद : फाँसी अंक, (सं.) चतुरसेन शास्त्री, स्वर्ण जयंती, शहादरा, नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ 2.*

*4 चाँद : फाँसी अंक, (सं.) चतुरसेन शास्त्री, स्वर्ण जयंती, शहादरा, नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ 2.*

*5 चाँद, जुलाई, 1928, पृष्ठ विज्ञापन.*

*6 चाँद, जुलाई, 1928, पृष्ठ विज्ञापन.*

*7 प्रदीप सक्सेना, 'ग़दर पार्टी (1913-18) : लहू में भीगी यादें और देशभक्ति', प्रतिमान, जुलाई-दिसंबर, 2013, प्रधान सम्पादक : अभय कुमार दुबे, भारतीय भाषा कार्यक्रम, विकासशील अध्ययन पीठ (सीएसडीएस), दिल्ली-54, पृष्ठ 502.*

*8 चमनलाल (सं.), शहीद भगतसिंह : दस्तावेजों के आईने में, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, वर्ष, 2007, पृष्ठ 203.*

*9 चाँद : फाँसी अंक, (सं.) चतुरसेन शास्त्री, स्वर्ण जयंती, शहादरा, नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ 1.*

*10 प्रदीप सक्सेना, 'ग़दर पार्टी (1913-18) : लहू में भीगी यादें और देशभक्ति', प्रतिमान, जुलाई-दिसंबर, 2013, प्रधान सम्पादक : अभय कुमार दुबे, भारतीय भाषा कार्यक्रम, विकासशील अध्ययन पीठ (सीएसडीएस), दिल्ली-54, पृष्ठ 504*